

बिहार में विधायकों की बदलती भूमिका : सामाजिक न्याय से सुशासन तक

धर्मेन्द्र कुमार पासवान

शोध छात्र, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

Corresponding Author - धर्मेन्द्र कुमार पासवान

DOI - 10.5281/zenodo.20423640

सारांश (Abstract):

भारतीय लोकतंत्र में राज्य विधानसभाएँ राजनीतिक प्रतिनिधित्व तथा जनसरोकारों के मध्य एक महत्वपूर्ण संस्थागत कड़ी के रूप में कार्य करती हैं। बिहार की राजनीति इस संदर्भ में विशेष महत्व रखती है क्योंकि यहाँ विधायकों की भूमिका समय के साथ उल्लेखनीय रूप से परिवर्तित हुई है। स्वतंत्रता के पश्चात प्रारंभिक दशकों में बिहार की राजनीति मुख्यतः कांग्रेस-प्रधान प्रशासनिक मॉडल पर आधारित रही, जहाँ विधायक विकास और प्रशासनिक प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते थे। परंतु 1990 के दशक में सामाजिक संरचना और राजनीतिक चेतना में व्यापक परिवर्तन के साथ राज्य में सामाजिक न्याय की राजनीति उभरी, जिसने पिछड़े वर्गों, दलितों तथा वंचित समुदायों की राजनीतिक भागीदारी को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया। इस दौर में विधायकों की भूमिका पारंपरिक विकास प्रतिनिधि से बदलकर सामाजिक पहचान और जातीय प्रतिनिधित्व के संरक्षक के रूप में सामने आई। इक्कीसवीं सदी के आरंभ विशेषकर 2005 के बाद बिहार की राजनीति में "सुशासन" (Good Governance) का विमर्श प्रमुख हुआ। इस चरण में प्रशासनिक सुधार, पारदर्शिता, जवाबदेही, आधारभूत संरचना विकास तथा डिजिटल प्रशासन को राजनीतिक एजेंडे में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप विधायकों की भूमिका केवल जातीय-सामाजिक प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं रही, बल्कि वे नीति-निर्माण, विकास योजनाओं की निगरानी तथा प्रशासनिक समन्वय के सक्रिय घटक के रूप में विकसित हुए। यह अध्ययन बिहार में विधायकों की भूमिका के ऐतिहासिक विकास, सामाजिक न्याय से सुशासन की ओर हुए संक्रमण तथा उसके लोकतांत्रिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। अध्ययन गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है और इसमें सरकारी रिपोर्टों, निर्वाचन आँकड़ों, अकादमिक साहित्य तथा संस्थागत दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है। शोध का निष्कर्ष यह इंगित करता है कि बिहार में विधायकों की भूमिका का परिवर्तन केवल राजनीतिक रणनीति का परिणाम नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास तथा प्रशासनिक पुनर्गठन की व्यापक प्रक्रियाओं से भी प्रभावित है।

मुख्य शब्द (Keywords): बिहार, विधायक, सामाजिक न्याय, सुशासन, लोकतंत्र, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, प्रशासनिक सुधार, विकास राजनीति.

प्रस्तावना (Introduction):

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में विधायक (Members of Legislative Assembly—MLAs) केवल कानून निर्माण करने वाले जनप्रतिनिधि नहीं होते, बल्कि वे राज्य तथा समाज के मध्य राजनीतिक, प्रशासनिक तथा विकासात्मक संबंधों के महत्वपूर्ण माध्यम भी होते हैं। भारतीय संविधान के अंतर्गत राज्य विधानसभाओं को विधायी शक्तियों के अतिरिक्त वित्तीय नियंत्रण, नीतिगत हस्तक्षेप तथा कार्यपालिका की जवाबदेही सुनिश्चित करने के अधिकार प्रदान किए गए हैं। बिहार विधानसभा देश की प्रमुख राज्य विधानसभाओं में से एक है, जिसमें वर्तमान में 243 निर्वाचित सदस्य हैं तथा यह राज्य की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दिशा निर्धारित करने वाली प्रमुख संस्था है। राज्य की लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विधायकों की भूमिका समय के साथ निरंतर बदलती रही है। प्रारंभिक वर्षों में उनकी भूमिका मुख्यतः क्षेत्रीय हितों का प्रतिनिधित्व करने तथा विकास योजनाओं को स्थानीय स्तर तक पहुँचाने तक सीमित थी, किंतु बदलती सामाजिक संरचना, राजनीतिक प्रतिस्पर्धा तथा प्रशासनिक आवश्यकताओं ने इस भूमिका को अधिक व्यापक और बहुआयामी बना दिया है।¹

स्वतंत्रता के बाद बिहार की राजनीति लंबे समय तक राष्ट्रीय आंदोलनों की विरासत तथा एकदलीय प्रभुत्व से प्रभावित रही। इस दौर में राजनीतिक प्रतिनिधित्व मुख्यतः परंपरागत सामाजिक समूहों और प्रभावशाली वर्गों के हाथों में केंद्रित था। राजनीतिक वैज्ञानिक राजनी कोठारी ने

भारतीय राजनीति को "कांग्रेस प्रणाली" के रूप में व्याख्यायित करते हुए कहा कि भारतीय राजनीति में सत्ता संरचना सामाजिक संबंधों से गहराई से प्रभावित होती है तथा प्रतिनिधित्व की प्रकृति समय के साथ बदलती रहती है।² इस अवधि में बिहार के विधायक मुख्यतः सरकारी योजनाओं के वितरण, सार्वजनिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा निर्वाचन क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिए उत्तरदायी समझे जाते थे।

1980 के दशक के उत्तरार्ध तथा विशेष रूप से 1990 के दशक में मंडल आयोग की सिफारिशों के लागू होने से भारतीय राजनीति की सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन देखने को मिला। बिहार इस परिवर्तन का प्रमुख केंद्र बनकर उभरा। सामाजिक न्याय आधारित राजनीति ने पिछड़े वर्गों, दलितों तथा अन्य वंचित समुदायों को सत्ता संरचना में अधिक प्रतिनिधित्व प्रदान किया। क्रिस्टोफ़ जैफरलो ने इसे भारतीय राजनीति की "मौन क्रांति" (Silent Revolution) कहा, जिसके माध्यम से राजनीतिक शक्ति का सामाजिक आधार व्यापक हुआ।³ इस परिवर्तन ने बिहार के विधायकों की भूमिका को भी परिवर्तित किया। विधायक अब केवल विकास योजनाओं के प्रतिनिधि नहीं रहे, बल्कि वे सामाजिक पहचान, जातीय प्रतिनिधित्व तथा समूह आधारित राजनीतिक आकांक्षाओं के प्रतीक भी बन गए।

यद्यपि सामाजिक न्याय की राजनीति ने लोकतांत्रिक भागीदारी का विस्तार किया तथा राजनीतिक सशक्तिकरण को प्रोत्साहन दिया, किंतु इसके साथ प्रशासनिक अक्षमता, संस्थागत

कमजोरी, भ्रष्टाचार, कमजोर आधारभूत संरचना तथा धीमी आर्थिक प्रगति जैसी चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आईं। 1990 के दशक तथा प्रारंभिक 2000 के दशक में बिहार को अक्सर "बीमारू राज्य" के रूप में देखा जाने लगा। योजना आयोग तथा विभिन्न विकास रिपोर्टों के अनुसार उस अवधि में राज्य में प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से काफी कम थी तथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आधारभूत संरचना के क्षेत्र में गंभीर चुनौतियाँ मौजूद थीं।⁴

2005 के बाद बिहार की राजनीति में "सुशासन" एक नए राजनीतिक विमर्श के रूप में उभरा। इस अवधि में प्रशासनिक पारदर्शिता, विधिव्यवस्था में सुधार, सड़क निर्माण, शिक्षा विस्तार, महिला सशक्तिकरण, पंचायत संस्थाओं को सुदृढ़ बनाने तथा डिजिटल प्रशासन पर विशेष बल दिया गया। बिहार आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार राज्य में सड़क नेटवर्क, विद्यालयों में नामांकन दर तथा महिला राजनीतिक भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण ने राजनीतिक प्रतिनिधित्व को नई दिशा प्रदान की।⁵ इसी अवधि में राज्य की आर्थिक विकास दर कई वर्षों तक राष्ट्रीय औसत से अधिक दर्ज की गई तथा बिहार ने सामाजिक और आधारभूत विकास के विभिन्न संकेतकों में सुधार प्रदर्शित किया।⁶

सुशासन आधारित राजनीतिक व्यवस्था के उदय के साथ विधायकों की भूमिका में भी संरचनात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगे। वे केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों तक

सीमित नहीं रहे, बल्कि वे विकास योजनाओं के क्रियान्वयन, प्रशासनिक निगरानी, जन शिकायत निवारण, सरकारी योजनाओं की निगरानी तथा स्थानीय स्तर पर प्रशासनिक समन्वय की प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदार बनने लगे। आधुनिक समय में नागरिकों की अपेक्षाएँ भी परिवर्तित हुई हैं। आज मतदाता विधायकों से केवल राजनीतिक पहचान की राजनीति नहीं, बल्कि रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, डिजिटल सेवाओं, आधारभूत सुविधाओं तथा उत्तरदायी शासन की भी अपेक्षा करते हैं।⁷

वर्तमान समय में बिहार के विधायक लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व, सामाजिक समावेशन तथा विकासात्मक नेतृत्व के त्रिस्तरीय उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। इस प्रकार बिहार में विधायकों की बदलती भूमिका सामाजिक न्याय से सुशासन की ओर संक्रमण की एक महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रक्रिया को प्रतिबिंबित करती है। इसी व्यापक संदर्भ में यह अध्ययन बिहार में विधायकों की भूमिका के बदलते स्वरूप तथा उसके सामाजिक और प्रशासनिक प्रभावों का विश्लेषण करता है।

साहित्य समीक्षा (Literature Review):

बिहार की राजनीति, सामाजिक न्याय आंदोलन तथा विधायकों की बदलती भूमिका पर अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विद्वानों, सरकारी संस्थाओं तथा शोधकर्ताओं द्वारा व्यापक अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों ने राजनीतिक प्रतिनिधित्व, लोकतांत्रिक सहभागिता, सामाजिक संरचना तथा शासन सुधारों के विभिन्न आयामों को स्पष्ट किया है।

राजनीतिक वैज्ञानिक राजनी कोठारी ने भारतीय राजनीति को "कांग्रेस प्रणाली" की अवधारणा के माध्यम से समझाने का प्रयास किया। उनके अनुसार भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक संरचना केवल संवैधानिक संस्थाओं द्वारा संचालित नहीं होती, बल्कि सामाजिक संबंध, जातीय संरचना तथा स्थानीय शक्ति समूह भी राजनीतिक प्रतिनिधित्व को प्रभावित करते हैं। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भारतीय राज्यों में राजनीतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तनों के साथ जुड़े होते हैं तथा प्रतिनिधित्व की प्रकृति समयानुसार विकसित होती रहती है।² उनके अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि बिहार में विधायकों की भूमिका किस प्रकार सामाजिक संरचना के बदलावों के साथ परिवर्तित हुई।

क्रिस्टोफ़ जैफरलो ने अपनी पुस्तक *India's Silent Revolution* में उत्तर भारतीय राज्यों विशेषकर बिहार और उत्तर प्रदेश में पिछड़े वर्गों के राजनीतिक उदय का गहन विश्लेषण किया है। उनके अनुसार मंडल राजनीति ने भारतीय लोकतंत्र के सामाजिक आधार का विस्तार किया तथा राजनीतिक शक्ति संरचना में ऐतिहासिक रूप से वंचित समुदायों के प्रवेश को सुनिश्चित किया। उन्होंने इसे लोकतंत्र की सामाजिक गहराई बढ़ाने वाली प्रक्रिया माना।³

राज्य की राजनीतिक अर्थव्यवस्था तथा प्रशासनिक विकास पर किए गए अध्ययनों में बिहार के सामाजिक न्याय से सुशासन की ओर संक्रमण को विशेष महत्व दिया गया है। बिहार आर्थिक सर्वेक्षण में यह दर्शाया गया है कि वर्ष 2005 के बाद राज्य में

सड़क अवसंरचना, विद्यालयी नामांकन, स्वास्थ्य सेवाओं तथा महिला राजनीतिक भागीदारी में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई।⁵ राज्य सरकार के आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण सड़क संपर्क तथा प्राथमिक शिक्षा में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई।⁶

लोक प्रशासन और लोकतांत्रिक संस्थाओं से संबंधित अध्ययनों में यह पाया गया है कि आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में विधायक केवल कानून निर्माण करने वाले प्रतिनिधि नहीं रह गए हैं, बल्कि वे स्थानीय विकास योजनाओं के समन्वयक, जन शिकायतों के समाधानकर्ता तथा सार्वजनिक नीति के कार्यान्वयनकर्ता के रूप में भी कार्य कर रहे हैं। सार्वजनिक प्रशासन संबंधी अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया है कि शासन की गुणवत्ता तथा विकासात्मक परिणामों में जनप्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।⁸

विभिन्न शोध अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि बिहार की राजनीतिक संरचना में सामाजिक न्याय और सुशासन दोनों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सामाजिक न्याय ने लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व का विस्तार किया जबकि सुशासन ने प्रशासनिक दक्षता और विकासात्मक उत्तरदायित्व को बढ़ावा दिया। परिणामस्वरूप, बिहार के विधायक आज बहुआयामी भूमिकाओं का निर्वहन कर रहे हैं, जिसमें राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सामाजिक समावेशन तथा प्रशासनिक नेतृत्व तीनों सम्मिलित हैं।⁹

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of Study):

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. बिहार में विधायकों की ऐतिहासिक भूमिका का अध्ययन करना।
2. सामाजिक न्याय आधारित राजनीति के दौर में विधायकों की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. सुशासन आधारित राजनीतिक मॉडल में विधायकों की भूमिका में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
4. सामाजिक न्याय और सुशासन के मध्य अंतर्संबंधों का मूल्यांकन करना।
5. लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व और विकासात्मक राजनीति पर इन परिवर्तनों के प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति (Research Methodology):

यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु निम्न स्रोतों का उपयोग किया गया है—

प्राथमिक स्रोत:

- बिहार विधानसभा अभिलेख
- निर्वाचन आयोग के आँकड़े
- सरकारी रिपोर्टें
- नीति दस्तावेज

द्वितीयक स्रोत:

- पुस्तकें
- शोध लेख

- जर्नल लेख
- सरकारी एवं संस्थागत रिपोर्टें
- अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के अध्ययन दस्तावेज

अध्ययन में वर्णनात्मक तथा तुलनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है जिससे बिहार में सामाजिक न्याय और सुशासन के मध्य संक्रमण को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

बिहार की राजनीतिक पृष्ठभूमि और विधायकों की भूमिका का ऐतिहासिक विकास:

बिहार भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्ययन-क्षेत्र रहा है, जहाँ सामाजिक संरचना, जातिगत विविधता, आर्थिक विषमता, ग्रामीण-शहरी अंतर, भूमि संबंधी असमानताएँ तथा जनआंदोलनों ने राजनीतिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली को गहराई से प्रभावित किया है। राज्य की राजनीतिक संस्कृति केवल चुनावी राजनीति तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक पुनर्गठन, प्रतिनिधित्व की मांग और सत्ता संरचनाओं के पुनर्वितरण की प्रक्रिया से भी जुड़ी रही है। बिहार की राजनीतिक यात्रा को सामान्यतः चार चरणों—स्वतंत्रता के पश्चात कांग्रेस-प्रधान राजनीति (1950–1989), सामाजिक न्याय की राजनीति (1990–2005), सुशासन एवं विकास आधारित राजनीति (2005–2015), तथा समावेशी विकास एवं प्रशासनिक आधुनिकीकरण (2015–वर्तमान)—में विभाजित किया जाता है। इन चरणों में विधायकों की भूमिका, उनकी प्राथमिकताएँ तथा जनता की अपेक्षाएँ निरंतर परिवर्तित होती रही हैं।

प्रारम्भिक दशकों में विधायक मुख्यतः स्थानीय प्रतिनिधि तथा प्रशासनिक योजनाओं और जनता के मध्य मध्यस्थ की भूमिका निभाते थे। उस समय कृषि, सिंचाई, ग्रामीण सड़क निर्माण तथा विकास योजनाओं का क्रियान्वयन उनके प्रमुख दायित्वों में सम्मिलित था। किंतु राजनीतिक शक्ति-संरचना पर उच्च जातीय समूहों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता था तथा वंचित समुदायों की भागीदारी अपेक्षाकृत सीमित थी।¹⁰

1960–1980 के दशक के दौरान आर्थिक असमानता, भूमि सुधारों की सीमित सफलता, बढ़ती बेरोजगारी तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी ने बिहार में नई राजनीतिक चेतना को जन्म दिया। इसी अवधि में छात्र आंदोलनों और जनआंदोलनों ने एक नए राजनीतिक नेतृत्व का निर्माण किया। विशेष रूप से 1974 का आंदोलन, जिसका नेतृत्व Jayaprakash Narayan ने किया, बिहार की राजनीतिक संस्कृति में एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। इस आंदोलन ने केवल तत्कालीन सत्ता संरचना को चुनौती नहीं दी, बल्कि लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व, भ्रष्टाचार-विरोध और जनभागीदारी जैसे मुद्दों को राजनीतिक विमर्श के केंद्र में स्थापित किया।¹¹

सामाजिक न्याय की राजनीति और विधायकों की भूमिका (1990–2005):

1990 का दशक बिहार की राजनीति में एक ऐतिहासिक परिवर्तन लेकर आया। मंडल आयोग की सिफारिशों के कार्यान्वयन ने भारतीय राजनीति में सामाजिक प्रतिनिधित्व और राजनीतिक

पुनर्संरचना की नई प्रक्रिया को गति प्रदान की। बिहार में इस परिवर्तन का प्रभाव अत्यधिक व्यापक था क्योंकि यहाँ सामाजिक संरचना पहले से ही जातिगत आधारों पर संगठित रही थी। सामाजिक न्याय का राजनीतिक विमर्श पिछड़े वर्गों, दलितों, अत्यंत पिछड़े वर्गों तथा अल्पसंख्यकों को सत्ता-संरचना में अधिक भागीदारी प्रदान करने के उद्देश्य से सामने आया।¹²

इस अवधि में विधायकों की भूमिका केवल प्रशासनिक प्रतिनिधि तक सीमित नहीं रही, बल्कि वे सामाजिक समूहों के संरक्षक, सामाजिक पहचान के वाहक और राजनीतिक अधिकारों के प्रतीक के रूप में विकसित हुए। उनकी राजनीतिक वैधता विकास योजनाओं की अपेक्षा सामाजिक समूहों की पहचान और समर्थन से अधिक प्रभावित होने लगी। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप बिहार विधानसभा की सामाजिक संरचना में उल्लेखनीय बदलाव दिखाई दिए। विभिन्न निर्वाचन अध्ययनों से संकेत मिलता है कि 1990 के बाद पिछड़े वर्गों तथा वंचित समुदायों का प्रतिनिधित्व निरंतर बढ़ा, जबकि परंपरागत प्रभुत्वशाली समूहों का अनुपात घटा।¹³

ग्रामीण क्षेत्रों, दलित समुदायों तथा महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। निर्वाचन आयोग के आँकड़े दर्शाते हैं कि बिहार में मतदान भागीदारी 1990 के दशक में लगभग 57–60 प्रतिशत के मध्य पहुँच गई, जो पूर्ववर्ती दशकों की तुलना में अधिक थी। इस प्रक्रिया ने लोकतंत्र के सामाजिक आधार का विस्तार किया तथा राजनीतिक सहभागिता को अधिक समावेशी स्वरूप प्रदान किया।¹⁴

हालाँकि सामाजिक न्याय आधारित राजनीति की कुछ सीमाएँ भी सामने आईं अनेक राजनीतिक अध्ययनों के अनुसार राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लोकतंत्रीकरण के साथ-साथ जातीय पहचान आधारित राजनीति भी मजबूत हुई, जिसके कारण कई बार विकास, औद्योगिकीकरण, शिक्षा और आधारभूत संरचना जैसे विषय अपेक्षाकृत पीछे चले गए। इसी अवधि में बिहार की आर्थिक वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत से कम बनी रही तथा राज्य की आधारभूत संरचना भी कमजोर स्थिति में रही।¹⁵

सुशासन का उदय और विधायकों की बदलती भूमिका (2005 के बाद):

वर्ष 2005 के पश्चात बिहार की राजनीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला, जिसे सामान्यतः "सुशासन मॉडल" के रूप में वर्णित किया जाता है। इस अवधि में राजनीतिक विमर्श सामाजिक पहचान तथा जातीय प्रतिनिधित्व से आगे बढ़कर विकास, प्रशासनिक दक्षता, संस्थागत सुधार, आधारभूत संरचना निर्माण तथा जनसेवा की गुणवत्ता पर केंद्रित होने लगा। राज्य में शासन की प्राथमिकताओं में कानून-व्यवस्था की मजबूती, सड़क संपर्क का विस्तार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता तथा सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान दिया गया। इस नई राजनीतिक संरचना ने विधायकों की भूमिका में भी व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया। जहाँ पूर्ववर्ती दौर में विधायक मुख्यतः सामाजिक समूहों के प्रतिनिधि और पहचान आधारित राजनीति के प्रतीक के रूप में कार्य करते थे, वहीं सुशासन के दौर में वे विकास

योजनाओं के प्रबंधक, नीति समन्वयक तथा प्रशासनिक मध्यस्थ के रूप में उभरकर सामने आए।¹⁶

इस परिवर्तन के अंतर्गत विधायकों की कार्यशैली और जिम्मेदारियों में उल्लेखनीय विस्तार हुआ। अब उनकी भूमिका केवल विधानसभा में कानून निर्माण या राजनीतिक प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं रही, बल्कि स्थानीय स्तर पर विकास कार्यक्रमों की निगरानी, प्रशासनिक अधिकारियों के साथ समन्वय तथा सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना भी उनके प्रमुख दायित्वों में शामिल हो गया। विधायक क्षेत्रीय विकास योजनाओं, सड़क निर्माण परियोजनाओं, विद्यालयों तथा स्वास्थ्य केंद्रों की समीक्षा और जनकल्याण कार्यक्रमों के मूल्यांकन में अधिक सक्रिय दिखाई देने लगे। इससे राजनीतिक प्रतिनिधित्व की अवधारणा अधिक परिणामोन्मुख और विकास-केंद्रित स्वरूप ग्रहण करने लगी।¹⁷

(i) विधायक से विकास प्रबंधक तक:

सुशासन मॉडल के अंतर्गत विधायकों की पारंपरिक भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ और वे स्थानीय विकास प्रबंधन की प्रक्रिया के महत्वपूर्ण भागीदार बन गए। अब उनसे केवल जनता की समस्याओं को विधानसभा तक पहुँचाने की अपेक्षा नहीं की जाती थी, बल्कि विकास योजनाओं के कार्यान्वयन और संसाधनों के प्रभावी उपयोग की जिम्मेदारी भी उन पर बढ़ गई। वर्तमान संदर्भ में विधायकों की प्रमुख जिम्मेदारियों में निम्नलिखित विषय विशेष रूप से सम्मिलित हैं—

तालिका 1: बिहार में प्रमुख विकास संकेतक

संकेतक	2005	2020–2025 (अनुमानित)
सड़क संपर्क	सीमित	उल्लेखनीय विस्तार
विद्यालय नामांकन	मध्यम	उल्लेखनीय वृद्धि
महिला साक्षरता	लगभग 33%	लगभग 61–63%
आर्थिक वृद्धि दर	लगभग 3– 4%	कुछ वर्षों में लगभग 10%

स्रोत: बिहार आर्थिक सर्वेक्षण एवं नीति आयोग
रिपोर्टों पर आधारित संकलन।

- सड़क एवं परिवहन अवसंरचना परियोजनाओं की निगरानी
- विद्यालयों तथा स्वास्थ्य केंद्रों की कार्यप्रणाली की समीक्षा
- सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन का मूल्यांकन
- प्रशासनिक अधिकारियों के साथ समन्वय
- स्थानीय क्षेत्र विकास निधि के प्रभावी उपयोग की निगरानी
- नागरिक शिकायतों का त्वरित समाधान

इस परिवर्तन ने विधायकों की भूमिका को केवल राजनीतिक प्रतिनिधि से आगे बढ़ाकर प्रशासनिक सहयोगी और विकास प्रबंधक के रूप में स्थापित किया।¹⁸

(ii) आधारभूत संरचना विकास में भूमिका:

2005 के पश्चात बिहार में आधारभूत संरचना विकास विशेष रूप से राजनीतिक प्राथमिकता का विषय बना। सड़क निर्माण, ग्रामीण संपर्क, पुलों तथा सार्वजनिक सुविधाओं के विस्तार ने राज्य के विकास संकेतकों में उल्लेखनीय परिवर्तन प्रस्तुत किए। बिहार आर्थिक सर्वेक्षण तथा नीति आयोग के विभिन्न अध्ययनों के अनुसार राज्य में सड़क संपर्क तथा विद्यालय नामांकन दरों में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई। महिला साक्षरता दर में भी उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला। कई वर्षों में बिहार की आर्थिक वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत से अधिक दर्ज की गई, यद्यपि बाद के वर्षों में इसमें कुछ उतार-चढ़ाव भी देखे गए।⁹

इन परिवर्तनों ने विधायकों को विकास योजनाओं के अधिक सक्रिय पर्यवेक्षक तथा जनकल्याण कार्यक्रमों के कार्यान्वयनकर्ता के रूप में स्थापित किया। अब उनकी राजनीतिक सफलता का मूल्यांकन केवल सामाजिक प्रतिनिधित्व के आधार पर नहीं, बल्कि विकासात्मक उपलब्धियों और प्रशासनिक प्रभावशीलता के आधार पर भी किया जाने लगा।¹⁰

(iii) महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और विधायकों की नई भूमिका:

बिहार ने स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण लागू कर राजनीतिक सहभागिता में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रस्तुत किया। इस निर्णय ने ग्रामीण स्तर पर महिला नेतृत्व, राजनीतिक जागरूकता तथा निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका को सुदृढ़ किया।

इसके परिणामस्वरूप महिलाओं से संबंधित मुद्दे— जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, सामाजिक सुरक्षा, महिला सुरक्षा तथा स्व-सहायता समूहों का विकास—राजनीतिक विमर्श के महत्वपूर्ण भाग बन गए।²¹

इस परिवर्तन ने विधायकों की भूमिका को भी प्रभावित किया क्योंकि उन्हें अब महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों तथा लैंगिक समावेशन की दिशा में अधिक उत्तरदायी भूमिका निभानी पड़ी। विभिन्न अध्ययनों में पाया गया है कि महिला नेतृत्व की वृद्धि से स्थानीय स्तर पर शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि हुई।²²

(iv) डिजिटल शासन और प्रशासनिक

आधुनिकीकरण:

वर्तमान समय में डिजिटल प्रशासन और ई-गवर्नेंस ने बिहार की राजनीतिक और प्रशासनिक संरचना में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। ऑनलाइन सेवा वितरण, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT), डिजिटल शिकायत निवारण प्रणाली तथा डेटा-आधारित प्रशासनिक निर्णय प्रक्रिया ने शासन प्रणाली को अधिक पारदर्शी और उत्तरदायी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम तथा राज्य स्तरीय ई-गवर्नेंस पहलों के परिणामस्वरूप प्रशासनिक सेवाओं तक नागरिकों की पहुँच अपेक्षाकृत सरल हुई है।²³

आज बिहार के विधायक केवल राजनीतिक नेता नहीं हैं, बल्कि वे—

- नीति समन्वयक

- प्रशासनिक मध्यस्थ
- सामाजिक प्रतिनिधि
- विकास प्रबंधक
- डिजिटल शासन के सहयोगी

के रूप में भी कार्य कर रहे हैं। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में विधायकों की यह बहुआयामी भूमिका राजनीतिक प्रतिनिधित्व को अधिक उत्तरदायी तथा परिणामोन्मुख स्वरूप प्रदान करती है।²⁴

निष्कर्ष (Conclusion):

बिहार की राजनीति में विधायकों की भूमिका का परिवर्तन केवल राजनीतिक नेतृत्व परिवर्तन का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, आर्थिक विकास, प्रशासनिक सुधार तथा लोकतांत्रिक विस्तार की दीर्घकालिक प्रक्रिया का परिणाम है। स्वतंत्रता के बाद के दशकों में विधायक मुख्यतः प्रशासनिक प्रतिनिधि तथा विकास योजनाओं के मध्यस्थ के रूप में कार्य करते थे। 1990 के दशक में सामाजिक न्याय की राजनीति के उदय ने इस भूमिका को सामाजिक प्रतिनिधित्व तथा पहचान आधारित राजनीति की दिशा में परिवर्तित कर दिया।

सामाजिक न्याय मॉडल ने लोकतंत्र के सामाजिक आधार को विस्तृत किया तथा पिछड़े वर्गों, दलितों और अन्य वंचित समूहों को राजनीतिक शक्ति संरचना में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। इससे बिहार की राजनीति में व्यापक सामाजिक परिवर्तन हुआ। हालाँकि विकासात्मक

चुनौतियों तथा प्रशासनिक कमजोरियों के कारण इसकी आलोचना भी हुई। इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में सुशासन आधारित मॉडल ने बिहार की राजनीतिक संस्कृति में विकास, पारदर्शिता तथा प्रशासनिक दक्षता को प्रमुख स्थान प्रदान किया। इस दौर में विधायकों की भूमिका केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं रही, बल्कि वे विकास योजनाओं के समन्वयक, प्रशासनिक मध्यस्थ तथा सार्वजनिक नीति के सक्रिय भागीदार के रूप में विकसित हुए।

फिर भी बिहार के समक्ष अनेक चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं—जैसे आर्थिक असमानता, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा राजनीतिक उत्तरदायित्व। भविष्य में बिहार की लोकतांत्रिक प्रगति इस बात पर निर्भर करेगी कि सामाजिक न्याय और सुशासन के मध्य किस प्रकार संतुलन स्थापित किया जाता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि बिहार में विधायकों की बदलती भूमिका लोकतंत्र की गतिशील प्रकृति को प्रतिबिंबित करती है, जहाँ राजनीतिक प्रतिनिधित्व लगातार नई सामाजिक एवं प्रशासनिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित होता रहता है।

संदर्भ सूची:

1. Constitution of India. (2024). *Legislative Relations and State Legislature Provisions* (pp. 168–172). New Delhi: Government of India.
2. Kothari, R. (1970). *Politics in India*. New Delhi: Orient Blackswan, pp. 112–117. Political representation in India discussed in relation to social structures.
3. Jaffrelot, C. (2003). *India's Silent Revolution: The Rise of the Lower Castes in North India*. New Delhi: Permanent Black, pp. 15–21. Analysis of lower caste political mobilization and democratic expansion.
4. Planning Commission. (2002). *National Human Development Report 2001*. New Delhi: Government of India, pp. 132–139.
5. Government of Bihar. (2024). *Bihar Economic Survey 2023–24*. Patna: Finance Department, pp. 27–35.
6. Government of Bihar. (2023). *Economic Survey of Bihar: Infrastructure and Development Indicators*, pp. 54–61.
7. Election Commission of India. (2024). *Statistical Report on General Election to Legislative Assemblies*, pp. 74–79.
8. Sharma, M.P., & Sadana, B.L. (2019). *Public Administration in*

- Theory and Practice*. New Delhi: Kitab Mahal, pp. 425–431.
9. Singh, R., & Verney, D. (2015). *Governance and Political Transformation in Indian States*. New Delhi: Sage Publications, pp. 188–196.
10. Frankel, F. R., & Rao, M. S. A. (Eds.). (1989). *Dominance and State Power in Modern India: Decline of a Social Order* (Vol. 2, pp. 115–132). New Delhi: Oxford University Press.
11. Narayan, J. P. (1978). *Towards Total Revolution* (pp. 84–97). Bombay: Popular Prakashan.
12. Government of India. (1980). *Report of the Backward Classes Commission (Mandal Commission Report)* (Vol. 1, pp. 56–74). New Delhi: Ministry of Social Justice and Empowerment.
13. Jha, S., & Pushpendra. (2012). Caste, Representation and Democratic Politics in Bihar. *Economic and Political Weekly*, 47(19), 48–57, pp. 50–53.
14. Election Commission of India. *Electoral Participation Trends in Bihar Assembly Elections*. New Delhi: Election Commission of India, pp. 25–29.
15. Government of Bihar. (2024–25). *Bihar Economic Survey* (pp. 42–56). Finance Department, Government of Bihar.
16. Government of Bihar. (2024–25). *Bihar Economic Survey* (pp. 58–69). Finance Department, Government of Bihar.
17. Kumar, S. (2018). Governance and Political Transformation in Bihar. *Indian Journal of Public Administration*, 64(3), 315–329, pp. 318–321.
18. Jenkins, R. (2011). *Democratic Politics and Economic Reform in India* (pp. 167–175). Cambridge University Press.
19. Government of Bihar. (2023). *Statistical Handbook of Bihar* (pp. 82–95). Directorate of Economics and Statistics.
20. Government of India. (2021). *National Institution for Transforming India (NITI Aayog): SDG India Index Report* (pp. 45–52).
21. Government of Bihar. (2006). *Bihar Panchayati Raj Amendment Act*

- (pp. 11–16). Patna: Government of Bihar.
22. United Nations Development Programme (UNDP). (2020). *Women's Political Participation and Local Governance in India* (pp. 32–39).
23. Government of India. (2023). *Digital India Programme Report* (pp. 74–83). Ministry of Electronics and Information Technology.
24. World Bank. (2021). *Governance and Public Service Delivery in India* (pp. 96–104). Washington DC: World Bank.